जन-जागरण की विचार प्रधान त्रैमासिकी

देश पक्ष

कुछ आरजू नहीं है, है आरजू तो यह.
रख दे कोई जरा-सी खाके वतन कफन में.
ऐ पुख्तकार उल्फत, हुशियार डिग न जाना
मरीज आशकां है इस दार और रसन में.
मौत और जिंदगी, है दुनिया का सब तमाशा
फरमान कृष्ण का था अर्जुन को बीच रन में.
जिसने हिला दिया था दुनिया को एक पल में
अफसोस क्यों नहीं है वह रूह अब वतन में?
सैयाद जुल्मपेशा आया है जब से 'हसरत'
हैं बुलबुलें कफस में, जागो-जगन चमन में.

△ क्रांतिकारी अशफाक उल्ला खां

दो

जन-जागरण की

विचार-प्रधान त्रैमासिकी

तेवरी-पक्ष

अंक २, वर्ष १

अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर, १९८३

संरक्षक :—

जफर आलम

लाला रामचरन गुप्ता

सम्पादक :—

रमेशराज

सह सम्पादक :—

अरुण लहरी

योगेन्द्र शर्मा

सुरेश त्रस्त

परामर्श समिति :—

हरद्वारी लाल वशिष्ठ

भँवरपाल सिंह

श्याम बेबस

देशबन्धु अग्रवाल

अनिल कुमार सक्सैना, एडवोकेट

सम्पर्क :—

१५/१०९, ईसानगर

अलीगढ़—२०२००१

समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र अलीगढ़ रहेगा ।

तेवरी-पक्ष के प्रवेशांक पर तेवरी के समर्थन या विरोध में हमें ढेरों पत्र प्राप्त हुए. इस तरह की रचनात्मक सक्रियता के प्रति हम लेखकों-पाठकों का मन से आभार प्रकट करते हैं. साथ ही आशा व्यक्त करते हैं कि हमें भविष्य में भी इसी तरह अपने विचारों-सुझावों से अवगत कराते रहेंगे ताकि हम गलत और सही का निर्णय लेकर उचित मार्ग की ओर अग्रसर हो सकें.

तेवरी के नामकरण को लेकर कई साहित्यकारों का एक सशक्त विरोध उभरा. अपने पक्ष में हम इतना ही कहना चाहेंगे कि यदि कोई बदमाश है और यकायक उसमें मानसिक बदलाव आता है, वह शराफत के साथ जिंदगी जीने लगता है, तो क्या हम उसके अतीत को दृष्टिगत रखते हुए उसे बदमाश ही कहते रहें ? नहीं न ?

ईंट, गारे और सीमेंट से बने हुए विभिन्न मकानों को कोठी, बंगला, सदन, संसद, सचिवालय, कार्यालय, आदि नामों से आखिर जानने की आवश्यकता क्या है ? उन्हें हम मात्र मकान ही क्यों नहीं कह देते ?

विभिन्न स्थानों पर एकत्रित व्यक्तियों को आखिर श्रोता-समूह, दर्शक समूह आदि में क्यों वर्गीकृत किया जाता है, उसे हम मात्र भीड़ क्यों नहीं मान लेते ?

जैसे हर चिकने और तरल पदार्थ को घी या तेल नहीं कहा जा सकता जैसे दीवार पर टँगे हर चित्र को पोस्टर या कलेंडर नहीं कहा जा सकता, जैसे हर दो सींग, चार टांग, एक पूँछ वाले पशु को बैल नहीं कहा जा सकता, जैसे विभिन्न जगह स्थिर व एकत्रित जल के स्थान को झील या ताल नहीं कहा जा सकता, ठीक उसी तरह तेवरी को गजल कहने वालों की बुद्धि पर हमें तरस आता है.

तेवरीपक्ष-2 पृ० 1

Scanned by CamScanner

हर चीज की एक चारित्रिक विशेषता होती है और उसी के अनुसार उसका मूल्यांकन किया जाता है. तेवरी और गजल के चरित्र में जमीन-आसमान का अन्तर है. दूसरे जब हम किसी वस्तु के शिल्प पर चरचा करते हैं तो उसमें चरित्र कोई महत्व नहीं रखता ? यदि रखता है तो आज की आज की तथाकथित हिन्दी गजल, अवामी गजल में ऐसा क्या है जो परम्परावादी गजल से चारित्रिक मेल खाता है ? क्या शिल्प का अर्थ मात्र अन्तानुप्रास (रदीफ-काफिये) को ही मानकर संतुष्ट हो जाना इस बात का द्योतक नहीं कि हम साहित्य क्षेत्र में भी रूढ़िवादी रहे हैं, और हैं.

यह तो ठीक ऐसी ही बात रही कि जैसे अतीत के आधार पर किसी बदमाश व्यक्ति को शराफत में आने पर भी वोला जाये— यार ! यह आदमी पहले बदमाश था, शरीफ हो गया है. यानी यह आदमी शरीफ-बदमाश है.

सामाजिक राजनीतिक विकृतिओं के प्रति तिलमिलाते विद्रोही तेवरों के आधार पर हमने तेवरी को काव्य की एक विधा के रूप में स्वीकारा है. इसलिए तेवरी के साथ तेवर की विशेषता के कारण कहानी, व्यंग्य, लघुकथा, उपन्यास, मुक्त छंद कविता को इसमें सम्मिलित किये जाने की बात ठीक उसी तरह रहेगी, जैसे कोई कहे कि यदि गजल का अर्थ प्रेमिका से प्रेमपूर्ण बातचीत है तो क्यों न पूरे हिन्दी या उर्दू श्रंगार काव्य को गजल में शामिल कर लिया जाये.

खैर......... तेवरी-पक्ष का यह अंक आपके सामने है. अपनी प्रतिक्रिया देना न भूलें.

तेवरी-पक्ष-३ लेख विशेषांक होगा. तेवरी को स्पष्ट करते हुए लेख सादर आमंत्रित हैं.

रमेशराज

तेवरीपक्ष - 2 पृ० 2

Scanned by CamScanner

तेवरी-पक्ष

पाठकीय

अलीगढ़

पत्रिका का उद्देश्य बहुत अच्छा है. 'बिस्मिल' की यह गजल पहली बार पढ़ी अन्य कविताओं में भी रस आया.

— मन्मथ नाथ गुप्त, दिल्ली

धारदार रचनाओं के सम्पादन हेतु बधाई. अभियान जारी रखें.

— अनिल भ्रमर, इलाहाबाद

तेवरी - पक्ष में आपका परिश्रम व संघर्ष बोलता है.

— डा० एन० सिंह, मेरठ

अभिनन्दनीय प्रकाशन. विविध स्तम्भों का सार्थक निर्वाह. तेवरी - पक्ष विशिष्ट, सुरुचिपूर्ण सामग्री से संयोजित पत्रिका.

— पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी, उज्जैन

अच्छा होगा कि आप प्रत्येक कवि की एक रचना को स्थान देकर, अन्य के लिए भी स्थान रखें.

— पं० करनालवी, पानीपत

प्रयास अनूठा, सराहनीय है. पत्रिका साहित्य जगत में तेवरियों की विशिष्टता के कारण स्थान बनायेगी.

— हसन जमाल, जोधपुर

महादेवी वर्मा के भारत-भारती पुरस्कार तथा जैनेन्द्र जी के विषय में जो विचार व्यक्त किये हैं, वे दुस्साहस भरे व काबिले तारीफ हैं.

— अमिता श्रीवास्तव, इलाहाबाद

रचनाओं की मूल्यवत्ता में कोई कमी नहीं. किन्तु तेवरी नाम की सार्थकता विवादास्पद है. 'अगजल' भी ऐसा ही तथाकथित आन्दोलन था. ....हिन्दी कविता भी तो प्रारम्भ से दरबार की चीज रही है. क्या कविता को दरबार की चीज मानकर कुछ कहना होगा. ....फिर भी आपके साहस को दाद देता हूं. बढ़ते रहें.

डा० हरिमोहन, श्री नगर

तेवरी अगर तेवरदार बात को स्पष्ट करती है, तो इसमें कहानी, कविता भी शामिल हो सकती है.

— रमेश श्रीवास्तव, गया

तेवरीपक्ष-2 पृ० 3

Scanned by CamScanner

भाव – पक्ष के आधार पर अब गजल और तेवरी के मध्य सीमा रेखा तय करना एकदम प्रासंगिक है.

— चित्रेश, सुलतानपुर

आन्दोलन एक दिशा तो देते ही हैं, साथ ही साथ साहित्य को प्रयोग के नाम पर क्षति भी कम नहीं पहुंचाते. तेवरी – पक्ष को इससे बचायें.

— कौशल पांडेय, कानपुर

वस्तुतः आपने सुविधाभोगी मठाधीशों व ठेकेदारों पर जो शाब्दिक प्रहार किये हैं, वे स्तुत्य हैं.

— डा० शीतांशु भारद्वाज, पिलानी

'बिस्मिल' जी की तेवरी या गजल देने से पत्रिका का उद्देश्य एक दम स्पष्ट हो गया.

— बाबूराम वर्मा, देहरादून

तेवरी आग उगल रही है. अब और क्या कहूं, इस मशाल को निरन्तर जलाये रखने के लिये इंधन आपको ही बनना है.

— रमेश अस्थिवर, इन्दौर

बहरहाल शुरूआत में काफी दम-खम है.

चरण सिंह 'अमी', इन्दौर

तेवरी को विधा के रूप में प्रतिष्ठित करें.

— निशांत, पीलीबंगा

तेवरी - पक्ष के कुशल सम्पादन हुतु बधाई.

— जगदीश श्रीवास्तव, विदिशा

मुफ्जफरपुर में आचार्या जानकी बल्लभ शास्त्री, पटना में केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', आरसी प्रसाद सिंह, राबिन शॉ पुष्प आदि से बातचीत हुई. सभी ने तेवरी का विरोध किया. उनका कहना है कि कुछेक यश-लिप्सों की राजनीत्ति है.

— श्याम बिहारी श्यामल, बिहार

यह तेवर एक संक्रमण का संकेत है, साथ ही प्रस्थान का भी.

— संजीव कुलटी

तेवरी - पक्ष अच्छी लगी, विशेषकर महादेवी वर्मा पर कटाक्ष.

— कमलेश भारतीय, दोआबा

Scanned by CamScanner

तेवरी – पक्ष एक सजग प्रहरी, युग चेता और जनमन का प्रतिनिधित्व करती है.

— विक्रम सोनी, इन्दौर

समय-समय पर साहित्यिक जागृति को नामकरण की जरूरत रही है. गजल के इस नये रूप का नाम ठीक ही है बीते दिमाग इसका विरोध करेंगे.

— शम्भू बादल, सं० - प्रसंग, हजारीबाग

और ये भी

हिन्दी साहित्य में कविता की जो फसल उगायी जा रही है, तेवरी उस फसल में उगा हुआ खरपतवार प्रतीत होता है. जिसे हमारे समक्ष साग - सब्जी बनाकर परोसा जा रहा है. प्रवेशांक अच्छा बन पड़ा है.

— कालीचरण प्रेमी, गाजियाबाद

जनाक्रोश की सशक्त अभिव्यक्ति

शीघ्र प्रकाश्य तेवरी संग्रह–३

इतिहास घायल है

संपादक—रमेशराज

मूल्य—दस रुपये

: इस संग्रह के सशक्त हस्ताक्षर हैं :

अरुण लहरी, अनिल 'अनल', योगेन्द्र शर्मा

रमेशराज, सुरेश त्रस्त

Scanned by CamScanner

△ अक्सर लोग इस बात को भूल जाते हैं कि १९१९ के पहले भारत में स्वतन्त्रता आन्दोलन के नाम पर जो कुछ भी था वह केवल क्रांतिकारी आन्दोलन ही था.

△ खुदीराम बहुत कम उम्र में फांसी के तख्ते पर चढ़ गये थे और जिस समय वह फांसी के तख्ते पर चढ़े थे, उनके गले में एक गीता की प्रति लटक रही थी. श्री अरविन्द ने भी गीता की एक व्याख्या की जिसका नाम था- 'गीता पर निबन्ध'. गीता की क्रांतिकारी व्याख्याओं में इसे गिना जा सकता है. इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं कि जब गांधी ने राष्ट्रीय आन्दोलन को क्रांतिकारी मोड़ से हटाकर दूसरा मोड़ देना चाहा, तो उन्होने गीता पर 'अनाशक्ति योग' के नाम से एक व्याख्या लिखी इसमें उन्होने गीता द्वारा अहिंसा का समर्थन किया और उन्होंने यूं कहा कि कुरुक्षेत्र का युद्ध असल में कोई युद्ध नहीं था यह तो मन और इंद्रियों का युद्ध मात्र था

△ यदि अंग्रेज प्रथम महायुद्ध में हार जाते तो यह निश्चित है इनमें से (क्रांतिकारियों में से) कुछ लोग भारत का शासन-सूत्र या तो स्वंय अपने हाथ में सँभालते या फिर इन्हें जमन राष्ट्रकुल या किसी ऐसे नाम के अन्तर्गत स्वराज्य न सही, अर्धराज्य देकर मंत्रिमंडल बनाने के लिए कहा जाता इस मंत्रमिंडल के प्रधानमंत्री के रूप में तिलक या अरविन्द होते तो नेहरू- के बिलकुल मध्यम श्रेणियों के मन्त्रियों और कई हालातों में बेईमान और भ्रष्ट मत्रियों से ये मन्त्री अच्छे होते.

△ गांधी जी बहुत दिन अंग्रेज सरकार से यह पूछते रहे कि तुम्हारा युद्धोद्देश्य क्या है, जब कि साम्राज्यवादियों का उद्देश्य साम्राज्यवाद की रक्षा ही हो सकता है.

△ १९४२ में चलाया हुआ आन्दोलन इतना अधिक क्रान्तिकारी हो गया कि इतिहास लिखा जाये तो वह असहयोग और सत्याग्रह का इतिहास न होगा, बल्कि वह तो क्रान्तिकारियों का इतिहास होगा.

नेपथ्य-2 पृ० 6

△ आजाद हिन्द फौज के अफसरों पर जो मुकद्मा चला और उसका जो प्रचार हुआ, उसी के कारण ब्रिटिश सरकार के आधीन काम करने वाली भारतीय फौज बिलकुल भड़क गयी, ब्रिटिश सरकार को अपने जासूसों से मालूम हुआ कि यदि इन अफसरों को सजा दी जायेगी तो भारतीय फौज में बगावत हो जायेगी. इसलिए ब्रिटिश सरकार ने यह निश्चय किया कि अब भारत छोड़कर चल देना चाहिये. इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि गिरते हुए साम्राज्यवाद को अन्तिम लात आजाद हिन्द फौज ने मारी.

△ भारत को स्वतन्त्र करने का श्रेय केवल कांग्रेस को ही प्राप्त नहीं है, जैसा कि किराये के टट्टू इतिहासकारों और लेखकों द्वारा पाठ्य-पुस्तकों में दिखाया जा रहा है. इतिहास झुठलाने का यह षडयंत्र बहुत ही भयकर है.

(साभार — "वे अमर क्रान्तकारी")

मन्मथनाथ गुप्त

—डी-१४, निजामुद्दीन, नई दिल्ली-१३

समकालीन सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियों पर प्रहार करता हुआ

तेवरी संग्रह — १

अभी जुबां कटी नहीं

सम्पादक – रमेशराज

(सहयोगी मूल्य – ५ रुपये)

अरुण लहरी, अजय अंचल, योगेन्द्र शर्मा

सुरेश त्रस्त, ज्ञानेन्द्र साज, रमेशराज

जन – विरोधी मानसिकता पर एक और प्रहार

तेवरी संग्रह — २

कबीर जिंदा है

सम्पादक – रमेशराज

(सहयोगी मूल्य – सजिल्द-२० रुपये, पेपरबैक-१२रुपये)

राजेश महरोत्रा, गिरि मोहन गुरु, ऋषभदेव शर्मा देवराज

डा० देवराज, फजल इमाम मल्लिक राजकुमार निजात

विक्रम सोनी, डा० एन. सिंह, अरुण लहरी अनिल 'अनल'

योगेन्द्र शर्मा, सुरेश त्रस्त, रमेशराज आदि.

Scanned by CamScanner

अभी जुबां कटी नहीं

तेवरी संग्रह – १
पर कतिपय समीक्षांश –

भूमिका में रमेशराज का बेवाक वक्तव्य अखरने के साथ स्वागत योग्य भी है

— दुनियादार, जून ८३, पृष्ठ १७

तेवरी के इतिहास में सर्वप्रथम तेवरी-संग्रह. रमेशराज की पृष्ठ-भूमि काफी सशक्त है.

— दर्शन-मंथन, मार्च-अप्रेल ८३, पृष्ठ २९

कुछ तेवरी हृदयस्पर्शी; स्पष्ट. शेष तुकबन्दी.

— रसमुग्धा, अप्रेल-जून ८३. पृष्ठ ६

तेवरी ही आधुनिक आक्रोश को ढो पायेगी, मुक्तछंद का युग गया, इस संकलन को पढ़कर ऐसा लगने लगा है.

— फ्रन्टियर मेल, १७ मार्च ८३, पृष्ठ ४

अधिकांश तेवरी ज्वलंत विचारों का प्रत्यक्ष अग्निबोध कराती हैं तथा समाज की वर्तमान व्यवस्था पर एक स्वस्थ साहित्यिक व्यंग्य हैं.

— जंग जारी है, १८-२४ अप्रेल ८३. पृष्ठ ३

क्रान्तिकारी काव्य संग्रह.

— चातुर्य, मई-जून ८३, पृष्ट ९

तेवरी एक चिल्लाहट है. वैसे संग्रह के तेवरीकार साधुवाद के पात्र है, वे आज नहीं तो कल, अपनी चिल्लाहट में सार्थकता ला सकेंगे.

— खिले-अधखिले, जून ८३, पृष्ठ ३३

संकलन की पहली खूबी श्री बिस्मिल को समर्पण तथा दूसरी श्री रमेशराज की सम्पादकीय ………, भविष्य में ये रचनाकार और भी धारदार रचनाएं देंगे.

— आसंगिनी. जून-जुलाई, पृष्ठ १९

शेष पृष्ठ ४५ पर →

Scanned by CamScanner

सारी उमर हुई चपरासी, चुप बैठा है गंगाराम
चेहरे पर छा गई उदासी, चुप बैठा है गंगाराम.

टुकड़े-टुकड़े मन का कागज, किसको आज दिखाये वो
न्यायालय में लगती फाँसी, चुप बैठा है गंगाराम.

टोपी जिसकी रही उछलती, टुकड़े जिसे नसीब नहीं
दुनिया उड़ा रही है हांसी, चुप बैठा है गंगाराम.

आजादी का मतलब केवल हाथ जोड़कर खड़े रहो
धोखा देते रहे सियासी, चुप बैठा है गंगाराम.

संपर्क – गुप्तेश्वर मन्दिर के सामने, अन्दर किला, विदिशा

Scanned by CamScanner

कृष्णावतार करुण

आजकल है हर किसी को प्यार झूठों से
चल रहा है आजकल संसार झूठों से.

पांच सालों तक दिलासा वो रहे देते
मानते तौबा सभी हर बार झूठों से.

क्या कहें, किससे कहें, कैसे कहें साथी
हो रहा हमको सभी दरकार झूठों से.

मयकदों में पड़े हैं गांव के मालिक
हो गया बरबाद हर घरबार झूठों से.

△ संपर्क – मु. सेवाराम, नजीबाबाद, बिजनौर.

तन खूं से लथपथ है लोगो
चीखों की दस्तक है लोगो.

डगर-डगर हर रस्ते में अब
खुद से ही दहशत है लोगों

हर दिन में अब कई मर्तबा
मरने की आदत है लोगो.

दंगा, कर्फ्यू, गस्त, सन्नाटा
शहर-शहर आहत है लोगो.

△ संपर्क – रामबाग, मुजफ्फरपुर-२

निशांत एक

जिधर भी बढ़ाना चाहा कदम उधर ही दीवार निकली
जो भी नब्ज टटोली इस मुल्क की वो बीमार निकली.

बुजुर्ग देते हैं परम्परा के हक में दलीलें यूं
इस देश की जवानी भी साली गद्दार निकली.

जंग लगे हैं सच औ' ईमान के औजार सब
झूठ औ' फरेब की तलवार धारदार निकली.

● संपर्क – द्वारा डी० राज पेंटर, पीली बंगा--३३५८०३

Scanned by CamScanner

अरुण लहरी   एक

देश यहां के सम्राटों ने लूट लिया
सत्ताधारी कुछ भाटों ने लूट लिया.

जनपथ आया था खरीदने सुख लेकिन
उसे राजपथ के हाटों ने लूट लिया.

जब - जब मंझधारों से कोई नाव बची
तब - तब उसको इन घाटों ने लूट लिया.

नींदों में था उस मजूर के एक सपना
लालाजी के खर्राटों ने लूट लिया.

न्याय - तुला तक पहुंच खुश हुआ होरीराम
मगर उसे नकली बाटों ने लूट लिया.

दो

भ्रष्ट हुई सरकार, आंकड़े बोल रहे
जरा पढ़ो अखबार, आंकड़े बोल रहे.

आज देश की सांस - सांस पर कर्जे का
लदा विदेशी भार, आंकड़े बोल रहे.

हर गर्दन पर महंगाई की, शोषण की
लटक रही तलवार, आंकड़े बोल रहे.

गांव - गांव में, हर नगरी में धर्म हुआ
अब चाकू की धार, आंकड़े बोल रहे.

नहीं दिखायी पड़ता कोई अपराधी
होता लेकिन वार, आंकड़े बोल रहे.

तीन

ये कैसी खुशहाली मेरे देश में
हर सू है कंगाली मेरे देश में.
मुल्क हुआ निर्जीव यहां, जबसे सत्ता
गिद्धों ने हथियाली मेरे देश में.
ऊपर से दिखती जनता भली-भली
है अन्दर से खाली मेरे देश में.
मंचों पर देते भाषण अब तो गूंगे
बहरे पीटें ताली मेरे देश में.
अंधकार का साम्राज्य है गली-गली
अब कैसी दीवाली मेरे देश में.

Scanned by CamScanner

चार

व्यक्ति पूजा अब यहां व्यापार होती जा रही है
इसलिए इन्सानियत बेकार होती जा रही है.

स्वार्थ के इस दौर में मुस्कराती ये सदी
आजकल दुःख दर्द का भंडार होती जा रही है.

अब सजाते हैं इसे तस्कर डकैत देखिये
राजनीति खून का शृंगार होती जा रही है.

लूट कर खाते हैं वे अब देश की हर योजना
उनकी खातिर हर प्रगति आहार होती जा रही है.

इस तरह की आ गई हैं मुल्क में खुशहालियां
आज रोटी पेट पर तलवार होती जा रही है.

Scanned by CamScanner

जब से सत्ता लगी सफाई अभियानों में
और गन्दगी बढ़ी सफाई अभियानों में.

हर कोटे को साफ कर गये जनसेवक जी
सारी चीनी गई सफाई अभियानों में.

फर्जी मुठभेड़ों में मारा निर्दोषों को
पुलिस इस तरह रही सफाई अभियानों में.

पहुंच गयी हर एक योजना अब घूरे पर
ऐसी चर्चा खुली सफाई अभियानों में.

शहर-शहर में हुयी भ्रूण की यूं हत्याएं
नन्हीं जानें गयीं सफाई अभियानों में.

छः

दौलत अब ईमान हो गयी
इन्सां की पहचान हो गयी.

होरी को थाने का डर है
झुनियाँ आज जवान हो गयी.

हर इन्सां की आज जिन्दगी
एक चींटी की जान हो गई.

अब चर्चा है घर-घर द्वारे
एक कुर्सी भगवान हो गयी.

आज सलीबों पर है हँसिका
ईसा की सन्तान हो गयी,

△ संपर्क -- टीकाराम बिल्डिग, आगरा रोड, अलीगढ़

सुरेश त्रस्त

एक

हाथ जोड़कर महाजनों के पास खड़ा है होरीराम.
ऋण की अपने मन में लेकर आस खड़ा है होरीराम.

याचक भाव लिये मुख पर, आँखों में आँसू का दरिया,
मुखिया जी का जैसे होकर दास खड़ा है होरीराम.

शोषण, दमन, भूख, उत्पीड़ा, बदहाली, कंगाली का,
कब से नाजाने बनकर इतिहास खड़ा है होरीराम.

आज नहीं तो कल विरोध हर अत्याचारी का होगा
अब तो मन में बाँधे यह विश्वास खड़ा है होरीराम.

गाय, बैल, झुनियां, धनियां, गोबर के मीठे सपनों की,
अपने हाथों में थामे इक लाश खड़ा है होरीराम.

दो

रिश्वत चलती अच्छी खासी, खुलकर आज अदालत में.
सच्चे को लग जाती फांसी, खुलकर आज अदालत में.

अफसर की तो बात छोड़िये, खेल रहा है लाखों में
साहब का अदना चपरासी, खुलकर आज अदालत में.

पकवानों से भरी हुई है, तोंद न्यायकर्ताओं की
जनता भटके भूखी प्यासी, खुलकर आज अदालत में.

जन-जन के मीठे सपनों की हत्यायें करने के बाद
छूट रहा बेदाग सियासी, खुलकर आज अदालत में.

गलत दलीलों और फैसलों की धन दौलत के बल पर
गायी जाती बारहमासी, खुलकर आज अदालत में.

Scanned by CamScanner

तीन

आदमी रह रहा मुखौटों में.
सत्य को कह रहा मुखौटों में.

होंट पर है हँसी मगर अब तो
त्रासदी सह रहा मुखौटों में.

हर खुशी आ गयी दिखावे में
दर्द पर बह रहा मुखौटों में.

अपना जिसको समझ बैठे हम
प्यार को दह रहा मुखौटों में.

आदमी कल जरूर सोचेगा
क्यूं बेवजह रहा मुखौटों में.?

चार

जिंदगी पर भार-सी है जिंदगी.
आजकल बीमार-सी है जिंदगी.

जल रही है आज औरों के लिए
देखिये सिगार-सी है जिंदगी.

एक चुटकी प्यार को तरसा किये
किस कदर लाचार-सी है जिंदगी?

हम पढ़ेंगे अब इसे खत की तरह
एक पत्राचार-सी है जिंदगी.

हँसते हुए चेहरे यहाँ पर 'त्रस्त'-हैं
आँसुओं की धार-सी है जिंदगी.

पाँच

जन जीवन अब अस्त-व्यस्त है.
थका हुआ-सा बड़ा पस्त है.
कुर्सी से जाकर जो चिपका
वह अपने में बहुत मस्त है.
उसका मजहब खून खराबा
वह चाकू में सिद्धहस्त है.
ग्रहण लगे हैं सपने अपने
आशाओं का चाँद ग्रस्त है.
यह कैसी पहरेदारी है ?
कहीं डकैती,कहीं गश्त है ?
दुख-दर्दों से नाते अपने
इसीलिए तो 'त्रस्त' त्रस्त है.

दर्द भरी हर शाम यहां है
अब बेजार अवाम यहां है.

पड़ते रोज देखिये डाँके
बहरा मगर निजाम यहां है.

नौकरशाहों की तूती है
बशर परेशाँ आम यहां है.

गाजर–मूली हुई जिंदगी
हरसू कत्लेआम यहां है.

भूखा–नंगा मानव देखो
उसको कब आराम यहां है.

बहुत मसीहा देखे हमने
हर कोई बदनाम यहां है.

त्रस्त हुआ है देखो बागी
अबतो यह इल्जाम यहां है.

△ ४६, आ. वि. कालोनी सासनीगेट, अलीगढ़

एक

बस्ती-बस्ती मिल रहे, अब भिन्नाये लोग.
सीने में आक्रोश की, आग छुपाये लोग.

जब से सत्ता हो गयी खूनी आदम खोर
हथियारों को चल रहे हाथ उठाये लोग.

नारों वादों से यहाँ अब न छलेंगे और
खुशहाली के नाम पर घाव बसाये लोग.

मंदिर-मस्जिद में मिले, हर नगरी, हर गाँव
धर्म, न्याय, भगवान से, चोटें खाये लोग.

क्रान्ति और विद्रोह की भड़क उठेगी आग
अब तो हैं इस बात की आस लगाये लोग.

रोजी-रोटी दे हमें या तो ये सरकार.
वर्ना हम हो जायेंगे, गुस्सैले, खूंख्वार.
फिर से अपने देश में ऐसे हैं हालात
खिचनी है अब म्यान से, राणा की तलवार.
और त्रासदी भूख की, अब न सहेंगे लोग
बस्ती-बस्ती हो रहा, सर पर खून सवार.
मुट्ठी-मुट्ठी तन रही नगर-नगर औ गाँव
लोग कर रहे क्रान्ति का, अव स्वागत, सत्कार.
हर जुल्मी के हाथों को, देंगे आज मरोड़
बहुत सहे, चुप ही रहे, हमने अत्याचार.

Scanned by CamScanner

तीन

हर एक तन पर पड़ रही, महंगाई की मार.
बस्ती-बस्ती लोग अब रोटी को लाचार.

रोज अदालत में खड़ा रोता होरीराम
दाना-दाना खेत का, लूटे साहूकार.

आज दवा के नाम पर विष देते हैं लोग
अन्तिम साँसें गिन रहा, देश हुआ बीमार.

नेताओं में बढ़ रही यूं कुर्सी की भूख
देह-देह को नोचती रहती हर सरकार.

कितनी जर्जर हो गयी, ये जनतंत्री नाव
कहीं डुबो ना दे इसे, माँझी है गद्दार.

Scanned by CamScanner

झूठों का होने लगा, गली-गली सम्मान
ढोता भइया आजकल, हर सच्चा अपमान.

दफ्तर-दफ्तर हो गये राजाशाही ठाठ
हर कुर्सी पर पुज रहा, अब तो बेईमान.

जिनकी फ़ितरत में रही साजिश, लूट-खसोट
वे यारो इस दौर के बन बैठे भगवान.

अब जीवन की दौड़ में, पिछड़ गये वे लोग
जिनमें बाकी है कहीं थोड़ा भी ईमान.

जब से निर्मित हो गये, कुछ सरकारी बांध
बिन पानी के जल रहे, खेत और इन्सान.

पाँच

युग-युग से इस देश का, घायल है इतिहास
रहापरकटा होंट पर, हास और परिहास.

मंदिर-मंदिर पुज रहा, दानव, चोर, डकैत
और पुजारी आज तक, भोग रहा बनवास.

छीन लिया शैतान ने, सब के मन का चैन
भूख गरीबी, त्रासदी, केवल अपने पास.

सच कहने पर पी रहा, विष अब भी सुकरात
और भोगता द्रोण का, एकलव्य संत्रास.

झिंगुरी, दातादीन के होते अत्याचार
सब कुछ चुप-चुप सह रहा, होरी बनकर दास.

छह

बातें करना कपट की, अब तुम छोड़ो यार.
प्यार और सद्भाव से, हर मन जोड़ो यार.

टहनी है ये नेह की, हैं रिश्तों के फूल
प्यार जताकर अब इसे, यूं मत तोड़ो यार.

इस मटके में आजकल, खूब भरे हैं पाप
लाओ जरा गुलेल तुम, इसको फोड़ो यार.

हो जायेगी उर्वरा, मन की खुश्क जमीन
प्रेम-नीर से सींचकर, इसको गोड़ो यार.

रक्त सने नाखून हैं, इसके चारों ओर
इस निजाम के हाथ को, आज मरोड़ो यार.

Scanned by CamScanner

अनिलकुमार 'अनल' — एक

देख लो क्या हो गया है हाल अब सरकार का?
वोट से रिश्ता जुड़ा है तोड़ रिश्ता प्यार का.

देश की पतवार छोड़े खे रहे हैं नाव जो
कह रहे हैं आज हमको ध्यान है मंझधार का.

भेड़िए अब पी रहे हैं सब गरीबों का लहू
लाभ पूरा ले रहे हैं आज वे अधिकार का.

अब नहीं महफ़ूज कोई घर यहाँ पर दोस्तो
लूटना हक हो गया है आज पहरेदार का.

जुल्म इतने ढ़ा गया है देखिये विकलांग वर्ष
घाव ज्यों का त्यों हरा है लाठियों की मार का.

इस तरह से लद गया है कर्ज से हर आदमी
ब्याज जीवन भर चुकाता सेठ-साहूकार का.

किस तरह की हो रही हैं साजिशें इस देश में
कल यहां पकड़ा गया है एक ट्रक तलवार का.

चंद खाकी वर्दियां और, टोपियाँ इस देश की
क्या करेंगी सामना इस तेवरी के वार का.

Scanned by CamScanner

देश हुआ बरबाद आजकल
पनपा घोर विषाद आजकल.

चोर - सिपाही भाई - भाई
कौन सुने फरियाद आजकल?

पूंजीवाद प्रगति पर यारो !
ये कैसा जनवाद आजकल?

'वीर भगत', 'बिस्मल', 'सुभाष' से
नहीं रहे 'आजाद' आजकल?

लाओ क्रान्ति, अरे सत्ता की
खूनी है बुनियाद आजकल.

Scanned by CamScanner

तीन

सच है कि आजकल यूं रहने लगे हैं लोग.
चुपचाप हर जुल्मो-सितम सहने लगे हैं लोग.

झूठ से जब से जुड़े इन के गहन सम्बन्ध
अपने सच-ईमान को दहने लगे हैं लोग.

दर्दो-गम की जिन्दगी में क्या हुई बरसात
कच्ची किसी दीवार से ढहने लगे हैं लोग.

हर किसी में तैरती है नाव पापों की
एक गंगा-से हुए रहने लगे हैं लोग.

हो न हो अब क्रान्ति की फूटेगी ज्वाला देखना
मैं सुन रहा हूं आजकल कहने लगे हैं लोग.

चार

सड़कों या चौराहों पर जब चीर हरण होता है
किसी द्रोपदी का हमको फिर स्मरण होता है.

चाहे ये इतिहास उठायें या फिर कोई और
महापुरुष के हाथों छलता हुआ कर्ण होता है.

ऐसी मादकता जीवन में कभी नहीं आयी
जैसे लोक-गीत का कोई प्रथम चरण होता है.

भीतर-भीतर कितना काला है ये मत पूछो
दिखने में यूं तो हर नेता श्वेत वर्ण होता है.

उस स्थिति में जाने कैसे लोग जिये होंगे
जिस स्थिति में शुरू हमारा रोजमरण होता है.

△ संपर्क — रंगमहल, जयगंज, अलीगढ़

लोग हैवान हुए दंगों में,

हिन्दू मुसलमान हुए दंगों में.

धर्म चाकू सा - पड़ा लोगों पर.

कत्ल इन्सान हुए दंगों में.

कोठी बंगले सफेदपोशों के,

भेड़िया - धंसान हुए दंगों में.

गुंडे मूँछ तान चले सड़कों पर,

ऐसे अभय दान हुए दंगों में.

देख लो यारो मन्दिर-मस्जिद,

बारूदी खान हुए दंगों में.

Scanned by CamScanner

दो

जिंदगी भर जहर पिया हमने,
पल-पल दर्द को जिया हमने.

जिनके चेहरों पे मुखौटे थे कई,
कह दिया उनको शुक्रिया हमने.

गीत जिसमें न आग हो न लपट,
माना हर वक्त मर्सिया हमने.

खैर चिड़ियों की मना, जंगल में,
अभी देखा है बहेलिया हमने.

बात जब क्रान्ति की उठी जो कहीं.
बढ़ के अंगारा छू लिया हमने.

तीन

लूटता साहूकार, क्या कहिए?
उसके खातों की मार, क्या कहिए?

हर तरफ तो गुलों के मेले हैं
और खुशबू फरार, क्या कहिए?

काठ के घोड़े थे, खिलौने थे
क्यूं हुए हम सवार? क्या कहिए?

होता अक्सर जीतना निश्चित
जिन्दगी जाती हार, क्या कहिए?

गूंगे-बहरों का ये मोहल्ला है
दिल में बातें हजार, क्या कहिए?

Scanned by CamScanner

चार

खींचता हर शख्स की अब खाल दातादीन
कर रहा हर जिंदगी मुहाल दातादीन.

लोग जीते हैं किसी तालाब की मछली हुए
रह रहा बन कर रहां घड़ियाल दातादीन.

एक चिड़िया भी कभी बचकर निकल सकती नहीं
फेंकता है इस तरह के जाल दातादीन.

गांव है निर्धन, गरीबी भूख है चारों तरफ
बस अकेला खूब मालामाल दातादीन.

व्यर्थ होरी आस तू इससे लगाकर जी रहा
दे नहीं सकता ये रोटी - दाल दातादीन.

पाँच

हो गयी शाम से सहर यारो
खत्म होता नहीं सफर यारो.

आज तक इसलिये ही जिंदा हैं
रोज पीते हैं हम जहर यारो.

लोग आंखें ही बंद कर बैठे
अंधेरा भाया इस कदर यारो.

यहां हर शख्स है किले की तरह
पत्थरों का है ये शहर यारो.

दर्द सोचू हूं आग हो जाये
सीना अपना है जख्मे - तर यारो.

Scanned by CamScanner

छह

जिंदगी बन गयी चुभन
रेत पर लिखा हुआ कथन.

लक्ष्य जाने खो गये कहां?
पांव को सालती थकन.

पिन सरीखा हो गया अस्तित्व
आदमी है गोया पिनकुशन.

होंठ पर है परकटी मुस्कान
अश्रुमय मिलते यहां नयन.

हर किसी में झूठ छल फरेब
आदमी का देखिये चलन.

▷ सम्पर्क— ३/२६-सी, लक्ष्मी बाई मार्ग, अलीगढ़-२०२००१

भारतीय साहित्यकार गधे व उल्लू के पठ्ठे हैं

जी हां, चौंकिये नहीं. ये शब्द हैं अलीगढ़ के एक सुपरिचित साहित्यकार सरस्वती-पुत्र डा० बुद्धसेन नीहार के जो हाल ही में सरकारी व्यय पर (हिन्दी के प्रचार प्रसार हेतु) विदेश यात्रा से लौटे हैं.

डा० बुद्धसेन नीहार अ० मु० विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रवक्ता हैं. इसके साथ - साथ ही वे अपने निवास स्थान पर मांटेसरी व जूनियर हाईस्कूल का भी संचालन करते हैं.

२० अगस्त ८३ को हम उन्हें तेवरी - पक्ष की एक प्रति भेंट करने के लिये उनके निवास स्थान पर पहुंचे. नीहार जी ने पत्रिका को कुछ इस तरह उलटना - पलटना शुरू कर दिया जैसे हमने अपनी पत्रिका किसी अ-हिन्दी भाषी प्रान्त के व्यक्ति को थमा दी हो. पत्रिका उलटते - पलटते यकायक वे एक तेवरी पर रुक गये. उसके एक तेवर में होठ के स्थान पर होंठ लिख गया था. उस गलत शब्द को (जैसा कि वे समझ रहे थे साथ ही उनके अनुसार हम भी. परन्तु जब हमने शब्द-कोष देखा तो सही शब्द होंठ ही निकला न कि होठ) पढ़ने के उपरांत वे हम पर बरस पड़े. उस वक्त बड़े ही सहज ढंग से हमने अपने अज्ञान को स्वीकार लिया. लेकिन वे फिर भी शांत नहीं हुए और लगभग चीखने की मुद्रा में (हो सकता है किसी दुराग्रहवश हो) लगातार बोलते रहे- 'मैं उन लेखकों या संपादकों को गधा और उल्लू का पठ्ठा मानता हूं जो भाषा अज्ञान के कारण गलत शब्दों का प्रयोग करते हैं. दुर्भाग्यवश यह कमी हमारे हिन्दी के बड़े से बड़े विद्वानों में पायी जाती है. ......जबकि अंग्रेजी साहित्य के साथ ऐसा बिल्कुल नहीं है.' यह कहते-कहते उन्होंने हिन्दी के लगभग बड़े-बड़े विद्वानों को अपशब्दों से सम्बोधित कर डाला.

तेवरीपक्ष-2 पृ०51

Scanned by CamScanner

तत्पश्चात उन्होंने पत्रिका की ढेर सारी कमियों को भी उजागर किया.

हम यह नहीं कहते कि उन्होंने जो कुछ कहा- गलत कहा, उनके सुझाव व सही विचार हमारे सिर-माथे. लेकिन उन्होंने सही बात को जिस असभ्य ढंग से पेश किया और हिन्दी साहित्यकारों को गालियों से विभूषित किया, इसके साथ ही अँग्रेजी साहित्यकारों को (जो आज भी हमारी दास मानसिकता का परिचायक है) जिस तरह सम्मानित किया, वह निश्चित रूप से हमारे सबके लिए लज्जाजनक बात है, जिसका हर स्तर पर विरोध किया जाना चाहिए.

खैर .... वे पत्रिका के कुछ और पन्ने पलटने लगे और पुनः एक शब्द पर अटक गये और हमें समझाने लगे कि– 'आप लोगों को सम्पादन की तमीज आनी चाहिए. शुद्ध शब्द 'मँहगाई' होता है न कि 'महँगाई'. हमने निवेदन के साथ उन्हें बताया— 'डा० साहब ! शब्द-कोष उठाकर देखें, सही शब्द 'महँगाई' ही है'

यह सुनकर-वे थोड़ा झेंपे और फिर सतर्क होकर बोले – 'भई हो सकता है मैं गलती पर होउँ ...... खैर इस महँगाई शब्द को छोड़िए .... मैं तो बात होंठ शब्द की कर रहा हूं ...... आप लोगों को इस तरह हिन्दी की दुर्गति नहीं करनी चाहिए.

इसका अर्थ तो यह हुआ कि—

अपनी सियाह पीठ छुपाता है आइना.
हमको हमारे दाग दिखाता है आइना.

उनका पता है: डा० बुद्धसेन नीहार
प्रवक्ता हिन्दी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़ - २०२००१.

तेवरीपक्ष - 2 पृ० 42

Scanned by CamScanner

समीक्षालय

और अब सड़क पर

कविता संग्रह, कवि : स्वप्निल शर्मा
सम्पर्क : यथार्थ प्रकाशन ६, सावरकर मार्ग, धार (म० प्र०)

जन विरोधी, साम्राज्यवादी शक्तियों के खिलाफ जनवादी मूल्यों की पक्षधर कविता की लड़ाई अब इतनी उग्र होती जा रही है कि कविता शब्दों के पैने धारदार हथियारों से लैस होकर बजाय चोरी छुपे प्रहार करने के सड़क, चोराहों पर खुले रूप में जम गयी है. प्रस्तुत कविता संग्रह पढ़कर यह बात स्पष्टत: महसूस की जा सकती है.

"और अब सड़क पर" कविता संग्रह की लगभग सभी कविताएं राजनीतिक परिवेश से जुड़ी वे कविताएं हैं जिनमें 'बेरूत का कत्लेआम' 'बम्बई की खामोश चिमनियों का बयान' जलते आदमी की गंध' 'उदास सड़क' 'अभाव' आदि के प्रति कवि के मन में एक ऐसा भूकम्प है जो अत्याचार और शोषण की बुनियाद पर खड़े सत्ताधारियों के अस्तित्व को तहस - नहस करने के लिये उतावला है.

△ समीक्षक – अरुण लहरी

मन्थन - १ तेवरी संगोष्ठी स्मारिका

संयोजक : पवन कुमार 'पवन', सम्पादक : डॉ. एस. एन. गुप्त
सम्पर्क : वी. वी. इण्टर कालेज, शामली (उ. प्र.)

डॉ. शिवमंगल सिंह सिद्धान्तकार के शब्दों में — आज की हमारी कविता 'अंधेरे बंद कमरे' की कशीदाकारी नहीं है और न 'धूप में घोड़े पर बहस है', बल्कि लीलाधर जगूड़ी के अनुसार — कविता वक्तव्य और आत्मालाप से गुजरती हुई सार्थक सम्बाद में बदल गयी है और लड़ाई की भाषा हो गयी है'.

प्रस्तुत तेवरी स्मारिका की तेवरियाँ पढ़कर यह बात आसानी से जानी जा सकती है . लगभग सभी तेवरियों के तेवर शोषण, अत्याचार

तेवरीपक्ष-2 पृ०53

से घिरे हुए आदमी का एक उग्र आक्रोशयुक्त बयान है.

इसके अतिरिक्त 'तेवरी काव्यान्दोलन का घोषणापत्र' 'तेवरी' 'तेवरी का राष्ट्रीय सोच' तथा 'तेवरी काव्य की राजनैतिक संचेतना' के तहत तेवरी के धरातल, स्वरूप और भूमिका पर अच्छी चर्चा की गयी है.

△ समीक्षक – सुरेश त्रस्त

प्रसंग – २ जनबातों की अनियतकालीन साहित्यिक प्रस्तुति
सम्पादक : शम्भु बादल
सम्पर्क : जगन्नाथ धाम, हजारी बाग, बिहार.

आजकल लघु-पत्रिकाओं की साहित्य के क्षेत्र में बाढ़-सी आयी हुई है. किंतु उनमें से कुछ ही ऐसी हैं जो सही मायनों में जनवादी मूल्यों के प्रति सचेत और संघर्षशील होकर बुर्जुआ, साम्राज्यवादी मानसिकता पर तीखा प्रहार कर रही हैं.

इस संदर्भ में 'प्रसंग' आदमखोर व्यवस्था के प्रति आक्रोश भरी एक ऐसी तिलमिलाहट है जो कहीं न कहीं जनक्रान्ति के लिये प्रेरित करती है. यह शम्भुबादल की काव्यात्मक सम्पादकीय से स्पष्ट हो जाता है.

प्रस्तुत अंक में जहां उदयप्रकाश को अशोक स्तम्भ के चौथे आदमखोर शेर को तलाश है वहीं राजा खुशहाल जनघातक प्रवृत्तियों के विरोध में आव्हान कर रहे हैं–लड़ाई में आओ, आओ कवि. रमेशराज प्रजातंत्र की खद्दरधारी गिद्धों के द्वारा संसद की नाक पर की गयी हत्या के विरोध में कविता का खंजर की तरह इस्तेमाल करते हैं. शम्भूबादल प्रजातंत्र की डुगडुगी बजाने वाले तानाशाहों की पहचान कराते हैं.

इसके अतिरिक्त भारत यायावर, वीरेन्द्र मोहन, भूपाल उपाध्याय, शैलेन्द्र चौहान, कालीकिंकर आदि की कविताएं भी गोलियों से भूनी हुई जनता के बीच हर जुल्म खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करती है.

कविता पर निष्पक्ष समीक्षात्मक लेखों के अतिरिक्त शम्भूबादल व मुकेश मिश्र की कविता की सार्थक भूमिका को स्पष्ट करती हुई परिचर्या प्रसंग की गुणवत्ता में चार चांद लगाती है.

△ समीक्षक – योगेन्द्र शर्मा